सूरह — एक कहानी

सूरह अल-फ़त्ह

फ़तह

पूरा सफ़र — वो शिकस्त जो खुली फ़तह थी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 48 • 29 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्ना फ़तह्ना लक फ़त्हम्-मुबीना

1. बेशक हमने तुम्हें एक खुली फ़तह अता की।

हुवल्-लज़ी अन्ज़लस्-सकीनत फ़ी क़ुलूबिल्-मु'मिनीन लि-यज़्दादू ईमानम्-म'अ ईमानिहिम

4. वही है जिसने मोमिनीन के दिलों में सुकून उतारा ताकि उनके ईमान में और ईमान बढ़े।

इन्नल्-लज़ीन युबायि'ऊनक इन्नमा युबायि'ऊनल्-लाह। यदुल्-लाहि फ़ौक़ अय्दीहिम

10. जो लोग तुम से बैअत करते हैं वो दर-असल अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है।

लक़द रज़ियल्-लाहु 'अनिल्-मु'मिनीन इज़ युबायि'ऊनक तह्तश्-शजरह

18. अल्लाह मोमिनीन से राज़ी हुआ जब वो दरख़्त के नीचे तुम से बैअत कर रहे थे।

फ़-'अलिम मा लम त'लमू फ़-ज'अल मिन दूनि ज़ालिक फ़त्हन क़रीबा

27. तो उसने वो जाना जो तुम न जानते थे, और इस से पहले एक क़रीब फ़तह रख दी।

मुहम्मदुर्-रसूलुल्-लाह। वल्लज़ीन म'अहू अशिद्दा-उ 'अलल्-कुफ़्फ़ारि रुहमा-उ बैनहुम

29. मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। और जो उनके साथ हैं वो काफ़िरों पर सख़्त और आपस में रहीम हैं।

एक मुआहदा जो शिकस्त लगता था

बेटा, इस सूरह को समझने के लिए पहले आपको वो दिन समझना होगा जिसे ये बयान करती है — क्योंकि उस दिन, नबी ﷺ के सहाबा उस से ज़्यादा ग़म-ज़दा थे जितना वो कभी हुए थे, **और अल्लाह ने उसे खुली फ़तह कहा।**

हिजरत के छठे साल, नबी ﷺ ने ख़्वाब में देखा कि वो और उनके सहाबा अमन के साथ मक्का में दाख़िल हुए और 'उमरह अदा किया। तो तक़रीबन **चौदह सौ** मोमिन निकले — मुसाफ़िर की तलवारों के सिवा बे-हथियार, एहराम में, अपने आगे क़ुर्बानी के जानवर हाँकते हुए। उन्होंने **छह साल** से मक्का नहीं देखा था। कुछ तो

वहीं अपने घरों से निकाले गए थे।

क़ुरैश ने उन्हें **हुदैबिया** नाम की जगह पर रोक लिया। और तनाव-भरे मुआहदात के बाद, एक मुआहदा साइन हुआ — और बेटा, उसकी शर्तें ज़िल्लत जैसी लगती थीं:

एक — मुसलमान इस साल 'उमरह किए **बग़ैर** वापस जाएँगे, और अगले साल लौटेंगे।

दो — दस साल की जंग-बंदी होगी।

तीन — और वो शर्त जिसने उनके दिल तोड़ दिए: अगर क़ुरैश का कोई शख़्स अपने सरपरस्त की इजाज़त के बग़ैर मदीना आए, तो उसे क़ुरैश को **वापस** किया जाएगा; मगर अगर कोई मुसलमान मदीना से मक्का चला जाए, तो उसे वापस **नहीं** किया जाएगा।

बेटा, एक खुले तौर पर यक-तरफ़ा शर्त। और मज़ीद: जब दस्तावेज़ लिखी जा रही थी, क़ुरैश ने 'बिस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम' पर और 'मुहम्मद, अल्लाह के रसूल' के उनवान पर ए'तिराज़ किया — **और नबी ﷺ ने उसे उनके अंदाज़ से लिखने पर रज़ामंदी दे दी।**

उमर (रज़ि0) तड़प उठे। वो नबी ﷺ के पास आए और पूछा: *क्या आप सचमुच अल्लाह के रसूल नहीं?* आपने कहा हाँ। *क्या हम हक़ पर और वो बातिल पर नहीं?* आपने कहा हाँ। *तो हम अपने दीन में ज़िल्लत क्यों क़ुबूल करें?* और नबी ﷺ ने फ़रमाया: '**मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ। मैं उसकी ना-फ़रमानी नहीं करूँगा, और वो मुझे बे-यार-ओ-मददगार नहीं छोड़ेगा।**'

और सहाबा इतने ग़म-ज़दा थे कि जब आप ﷺ ने उन्हें अपने जानवर ज़िबह करने और अपने सर मुँडवाने को कहा, **कोई न हिला** — बग़ावत से नहीं, बेटा, बल्कि सदमे और इस उम्मीद से कि शायद फ़ैसला अभी भी बदल जाए। आप उम्मे सलमा (रज़ि0) के पास गए, और उन्होंने मशवरा दिया: *बाहर जाइए, किसी से कुछ न कहिए, अपना जानवर ज़िबह कीजिए और अपने हज्जाम को बुलाइए।* आपने ऐसा ही किया — और जब उन्होंने आपको देखा, वो उठे और ऐसा ही किया, **ग़म में तक़रीबन एक

दूसरे का सर मूँडते हुए।**

और वापसी के सफ़र पर, ये सूरह नाज़िल हुई।

हमने तुम्हें खुली फ़तह अता की

'**इन्ना फ़तह्ना लक फ़त्हम्-मुबीना** — बेशक, **हमने तुम्हें एक खुली फ़तह अता की।**'

बेटा, तसव्वुर कीजिए उस आयत को सुनना जब आप उस चीज़ से घर की तरफ़ सवार थे जिसे हर एक **ज़िल्लत-भरी हार** समझता था। उमर (रज़ि0) ने पूछा: *क्या ये फ़तह है?* और उन्हें बताया गया **हाँ**। और बाद में उन्होंने कहा कि उन्होंने उस दिन जो कहा उसके ख़ौफ़ से **सदक़ा देते, रोज़े रखते और नमाज़ पढ़ते रहे।**

और तारीख़ ने इस आयत को हैरत-अंगेज़ रफ़्तार से साबित किया, बेटा। मुआहदे ने दर-असल क्या पैदा किया?

जंग-बंदी ने लड़ाई ख़त्म कर दी — और पहली बार, अरब **आज़ादी से सफ़र, बात और सुन** सकते थे। **इस्लाम उन दो सालों में पिछले उन्नीस सालों से ज़्यादा फैला। ** हुदैबिया के लिए निकलने वालों की तादाद चौदह सौ थी; **दो साल बाद, दस हज़ार** मक्का की फ़तह की तरफ़ चले।

भगोड़े वापस करने वाली शर्त, जो इतनी ना-इंसाफ़ लगती थी, **क़ुरैश के ख़िलाफ़ मुड़ गई**: जो साहिल की तरफ़ भागे उन्होंने एक गिरोह बनाया जो क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले रोका करता, यहाँ तक कि **क़ुरैश ने ख़ुद इस शर्त को मंसूख़ करने की इल्तिजा की।**

और सब से अहम, बेटा: उसके साथ मुआहदा साइन कर के, **क़ुरैश ने पहली बार मुहम्मद ﷺ को एक ऐसा लीडर तस्लीम कर लिया जिस से उन्हें मुआहदात करने पड़ते थे**, न कि एक बाग़ी जिसे कुचला जाए।

बेटा, सबक़ वो है जिसकी आपको ज़िंदगी में कई बार ज़रूरत होगी: **जो चीज़ एक धक्का लगती है वो दरवाज़ा हो सकती है।** आप वाक़िआत के दूसरे और तीसरे

नताइज देखने के क़ाबिल नहीं; **वो हैं।** तो जब कोई मंसूबा बिखर जाए और आप उसे समझ न सकें, **हुदैबिया याद रखिए** — और याद रखिए कि अल्लाह ने उसे फ़तह **तब** कहा जब कोई उसे देख न सकता था।

'लि-यग़्फ़िर लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक व मा त-अख़्ख़र — ताकि अल्लाह तुम्हारे लिए वो माफ़ कर दे जो पहले हुआ और जो बाद में — व युतिम्म नि'अ्मतहू 'अलैक — और तुम पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे।'

उतारा गया सुकून

'**हुवल्-लज़ी अन्ज़लस्-सकीनत फ़ी क़ुलूबिल्-मु'मिनीन लि-यज़्दादू ईमानम्-म'अ ईमानिहिम** — **वही** है जिसने मोमिनीन के **दिलों** में **सुकून उतारा**, ताकि वो अपने ईमान के साथ **ईमान में बढ़ें।**'

बेटा, '**सकीनह**' — 'सुकून' से, ठहराव। ये एक ऐसा क़रार है जो अल्लाह दिल में **उतारते** हैं। वो क़रार नहीं जो आप ख़ुद से बहस कर के बनाते हैं, ख़तरे की ग़ैर-मौजूदगी नहीं — **एक उतरता हुआ अमन, मुश्किल के बीचो-बीच दिया गया।**

और ग़ौर कीजिए उसका मक़सद: 'लि-यज़्दादू ईमानम्-म'अ ईमानिहिम' — **ताकि उनके ईमान में और ईमान बढ़े।** बेटा, यही वो दलील है जो अहल-ए-सुन्नत हमेशा देते हैं: **ईमान बढ़ता और घटता है।** वो एक स्विच नहीं जो ऑन या ऑफ़ हो; वो एक शोला है जिसे हवा दी जाती है।

'व लिल्लाहि जुनूदुस्-समावाति वल्-अर्ज़ — और आसमानों और ज़मीन के **लश्कर** अल्लाह ही के हैं।' बेटा, उन्हें आपकी तलवार की ज़रूरत न थी — उन्होंने आपको सिर्फ़ **शामिल होने का शरफ़** दिया।

दरख़्त के नीचे बैअत

और अब, बेटा, पूरे वाक़िए का सब से ख़ूबसूरत लम्हा।

मुआहदात के दौरान, नबी ﷺ ने **'उस्मान इब्ने 'अफ़्फ़ान (रज़ि0)** को सफ़ीर बना

कर मक्का भेजा। उन्हें देर हो गई — और कैंप तक एक अफ़वाह पहुँची कि **उन्हें क़त्ल कर दिया गया है।**

बेटा, उस लम्हे मुसलमान बे-हथियार थे, तादाद में कम, घर से दूर, और क़ुरैश की पूरी ताक़त के सामने। और नबी ﷺ ने उन्हें **बैअत** के लिए बुलाया। एक एक कर के, **चौदह सौ आदमी** आए और अपने हाथ आप के हाथ में रखे, ये क़सम खाते हुए कि **वो नहीं भागेंगे** — कुछ रिवायतों में वो **मौत तक लड़ने** की बैअत की।

ये एक **दरख़्त के नीचे** हुआ। और इसे **बैअत अर-रिज़वान** — अल्लाह की रज़ामंदी की बैअत — कहते हैं।

'**इन्नल्-लज़ीन युबायि'ऊनक इन्नमा युबायि'ऊनल्लाह** — बेशक, जो **तुम से बैअत** करते हैं वो दर-असल **अल्लाह** से बैअत करते हैं — **यदुल्लाहि फ़ौक़ अय्दीहिम** — **अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है।**'

बेटा, इसे महसूस कीजिए। उनके हाथ रसूल ﷺ के हाथ में थे — और अल्लाह एलान करते हैं कि **उनका हाथ उनके हाथों के ऊपर था।** हम इसे उसी तरह मानते हैं जैसे अल्लाह ने बयान किया, बिना 'कैसे' पूछे और बिना उन्हें उनकी मख़लूक़ से तशबीह दिए।

'**लक़द रज़ियल्लाहु 'अनिल्-मु'मिनीन इज़ युबायि'ऊनक तह्तश्-शजरह** — **अल्लाह मोमिनीन से यक़ीनन राज़ी हुआ जब वो दरख़्त के नीचे तुम से बैअत कर रहे थे** — फ़-'अलिम मा फ़ी क़ुलूबिहिम फ़-अन्ज़लस्-सकीनत 'अलैहिम — उसने **जाना** जो उनके **दिलों** में था, तो उसने उन पर **सुकून** उतारा।'

बेटा, '**रज़ियल्लाहु 'अन्हुम**' — अल्लाह ने उन से अपनी **रज़ामंदी** का एलान किया, नाम ले कर, एक ऐसी किताब में जो क़ियामत तक पढ़ी जाएगी। नबी ﷺ ने उन के बारे में फ़रमाया: '**जिन्होंने दरख़्त के नीचे बैअत की उन में से कोई आग में दाख़िल नहीं होगा।**'

और एक तफ़सील जानने लायक़ है, बेटा: बाद में, कुछ लोग **उस दरख़्त की ज़ियारत** कर के उस से बरकत तलब करने लगे। **उमर (रज़ि0) ने, अपनी

ख़िलाफ़त के दौरान, उसे कटवा दिया** — इस ख़ौफ़ से कि लोग एक दरख़्त की ताज़ीम शुरू न कर दें।

बेटा, उस चौकस-पन को देखिए: **उन्होंने तौहीद की हिफ़ाज़त उस दरख़्त से भी की जिसका ख़ुद अल्लाह ने ज़िक्र किया था। निशानी की इज़्ज़त करो; उसे कभी मत पूजो।**

ख़्वाब पूरा हुआ, और एक नस्ल की तस्वीर

'**लक़द सदक़ल्लाहु रसूलहुर्-रुया बिल्-हक़्क़** — अल्लाह ने अपने रसूल का **ख़्वाब** हक़ के साथ यक़ीनन **सचा** किया — ल-तद्ख़ुलुन्नल्-मस्जिदल्-हराम इन शा-अल्लाहु आमिनीन — तुम ज़रूर मस्जिद-ए-हराम में **अमन** के साथ **दाख़िल** होगे — मुहल्लिक़ीन रू'ऊसकुम व मुक़स्सिरीन **ला तख़ाफ़ून** — अपने सर मुँडे और कटवाए, **बिना डर के।**'

बेटा, ख़्वाब सचा था — **उसका बस एक टाइमटेबल था जिसे सहाबा न जानते थे।** '**फ़-'अलिम मा लम त'लमू** — उसने वो **जाना** जो **तुम न जानते** थे — फ़-ज'अल मिन दूनि ज़ालिक फ़त्हन क़रीबा — और इस से पहले एक **क़रीब फ़तह** रख दी।'

बेटा, **हर मायूसी के लिए उस जुमले को याद कर लीजिए**: 'फ़-'अलिम मा लम त'लमू' — उसने वो जाना जो तुम न जानते थे। **आपकी दुआ रद्द नहीं होती; कभी वो शेड्यूल कर दी जाती है।**

और फिर, बेटा, इस सूरह की आख़िरी आयत — नबी ﷺ और उनके सहाबा की एक ऐसी तस्वीर इतनी ठीक कि ये चौदह सदियों से नक़्ल की जा रही है:

'**मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह** — **मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं** — **वल्-लज़ीन म'अहू अशिद्दा-उ 'अलल्-कुफ़्फ़ारि रुहमा-उ बैनहुम** — और जो **उनके साथ** हैं वो काफ़िरों पर **सख़्त** हैं, आपस में **रहीम** हैं।'

बेटा, तवाज़ुन देखिए: **सख़्ती और रहमत उन्हीं लोगों में, हर एक अपनी सही जगह

पर।** अपने भाइयों के साथ सख़्त और बातिल के साथ नरम नहीं — **इसका उल्टा।** और ग़ौर कीजिए ये उनकी दुश्मनी और ज़्यादती के मुक़ाबले स्टांस बयान करता है; क़ुरआन ख़ुद उन लोगों के साथ भलाई और इंसाफ़ का हुक्म देता है जो मोमिनीन से नहीं लड़ते।

'**तराहुम रुक्क'अन सुज्जदंय्-यब्तग़ून फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वाना** — तुम उन्हें **रुकू** और **सजदे** में देखते हो, अल्लाह का **फ़ज़्ल** और **रज़ामंदी** तलब करते हुए।'

बेटा, ग़ौर कीजिए वो क्या तलब करते हैं: 'फ़ज़्लंव्-व रिज़्वाना' — उसका फ़ज़्ल और उसकी **रज़ामंदी**। शोहरत नहीं, ताक़त नहीं — **उसकी रज़ामंदी।**

'**सीमाहुम फ़ी वुजूहिहिम मिन असरिस्-सुजूद** — उनकी **निशानी** उनके **चेहरों** पर **सजदे के असर** से है।'

बेटा, उलमा ने इसे दो तरह से समझाया, और दोनों ख़ूबसूरत हैं। कुछ ने कहा ये पेशानी पर जिस्मानी निशान का ज़िक्र है। मगर बहुत से, सलफ़ में से भी, ने इसे उस **नूर और वक़ार** के तौर पर समझाया जो उस शख़्स के चेहरे पर ज़ाहिर होता है जो बहुत नमाज़ पढ़ता है — एक दिखता सुकून और आजिज़ी। और उन्होंने इसके उल्टा से ख़बरदार किया: **पेशानी पर एक सख़्त निशान लोगों को दिखाने के लिए वो 'सीमह' नहीं जिसे ये आयत सराहती है; ये उस नूर की तारीफ़ करती है जिसे एक शख़्स बनावट नहीं कर सकता और इश्तिहार नहीं देता।**

और आयत ये कह कर ख़त्म होती है कि ये बयान तौरात और इंजील में है — और ये एक **खेत** की तस्वीर देती है: '**क-ज़र्'इन अख़्रज शत्-अहू फ़-आज़रहू फ़स्तग़्लज़ फ़स्तवा 'अला सूक़िही यु'जिबुज़्-ज़ुर्रा** — उस **खेती** की तरह जो अपनी **कोंपल** निकालती है, फिर उसे **मज़बूत** करती है, तो वो **घनी** हो जाती है और अपने **तने** पर **सीधी खड़ी** हो जाती है, **बोने वालों को भाती** हुई।'

बेटा, ख़त्म करने को क्या तस्वीर है। **ये उम्मत मक्का में एक अकेली पतली कोंपल

की तरह शुरू हुई** — मज़ाक़ उड़ाई, बॉयकॉट की गई, तक़रीबन कुचली गई। फिर वो मज़बूत हुई, घनी हुई, और **अपने ही तने पर सीधी खड़ी हो गई**, यहाँ तक कि जिन्होंने उसे बोया वो उसे देख कर ख़ुश हुए।

और यही, बेटा, हुदैबिया पर आख़िरी लफ़्ज़ है। **सहाबा ने एक शिकस्त देखी। अल्लाह ने एक पौदा देखा जिसे कटाई से पहले मज़बूत किया जा रहा था।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. जो चीज़ एक धक्का लगती है वो दरवाज़ा हो सकती है — अल्लाह ने हुदैबिया को खुली फ़तह तब कहा जब कोई उसे देख न सकता था।

2. इताअत का मतलब कभी ना-पसंद शर्तें क़ुबूल करना है: 'मैं अल्लाह का बंदा हूँ; वो मुझे बे-यार-ओ-मददगार नहीं छोड़ेगा।'

3. सकीनह **उतारी** जाती है — कभी वो हालात बदलते हैं, कभी उस के अंदर वाले दिल को; दूसरा बड़ी रहमत है।

4. ईमान बढ़ता और घटता है — इसे हवा देते रहिए।

5. 'अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर' — जब आप उसके लिए कोई अहद बाँधें, तो जान लीजिए किस के साथ बाँध रहे हैं।

6. उमर (रज़ि0) ने वो दरख़्त कटवा दिया — निशानी की इज़्ज़त कीजिए, उसे कभी मत पूजिए।

7. 'फ़-'अलिम मा लम त'लमू' — आपकी दुआ रद्द नहीं होती; कभी वो शेड्यूल कर दी जाती है।

या अल्लाह, हमारे दिलों पर सकीनह उतारिए, हमारी शिकस्तों को फ़तह बना दीजिए, और हमें उन में शामिल फ़रमाइए जो आपस में रहीम और सजदों में सुकून वाले हैं। आमीन।